{1.}

# पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

# पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-78-0

**दाम :** ₹49/-

**पहिल संस्करण :** 2018

**प्रकाशक :** पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

**वेबसाइट :** http://pallavipublication.blogspot.com
**ई-मेल :** pallavi.publication.nirmali@gmail.com
**मोबाइल :** 8539043668, 9931654742

**प्रिन्ट :** मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
**आवरण :** श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

**PANCHDEO : 1**
*Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.*

# दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

**उमेश मण्डल**

**निर्मली**

**24 नवम्वर 2018**

# कथाक सत्तैर-

# एक तम्मा सिदहा

आसिन आठ दिन बीत गेल। काल्हि मातृनवमीक खाइन-पीयुन छी। लोकक पड़ाइन गामसँ भेने नौतहारीक अभाव भइये गेल अछि जइसँ तीन-दिन अगतेसँ लोक नौतहारी ताकि रहल छल मुदा अभाव रहने एक-एक गोरेकेँ तीन-तीन–चरि-चरि ठामक नौतो पड़ल आ ओ सहर्ष स्वीकारो कइये लेलक। स्वीकार करैक कारण सरकारी रेकर्ड जकाँ खाना-पुरी करब तँ छेलैहे। भाय, जखन जीवित-लोकक जरूरतक पूर्ति खानापुरीसँ भऽ सकैए तखन मृत्यु-लोकक किए ने भऽ सकैए। अदौसँ लोक जनैत आबि रहल अछि जे पान नइ रहए तँ पानक डंटियोसँ विधि पूर्ति होइते अछि तखन...।

बेरुका अढ़ाइ बजेक समय। ओना, खढ़चट्टा समय भेने भादवेक रौद जकाँ रौदमे तीखपन छेलैहे, मुदा अभ्यासो तँ अभ्यास छी, जइ समयमे चाह पीबैक वा भोजन करैक वा भाँगे पीबैक समय बना नेने छी, तइ समयमे ओ चाह करबे करैए। सएह भेलैन जीतू काकाकेँ। किएक तँ जाड़क मास रहौ कि गरमी मास आकि बरसाते किए ने रहौ, जे समय जइ तुकक आबि जाइ छैन ओ तुक ओइ समय चाह करबे करै छैन। अढ़ाइ बजे बेरमे जे चाह पीबैक अभियास जीतू काकाकेँ भऽ गेल छैन ओही आशामे दरबज्जापर बैस आँगनक मुँह देख रहला अछि। ओना, मनमे

अपन गामक चारू सीमानक विचार सेहो उठि चुकल छेलैन मुदा तइ बिच्चेमे सुखनी काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचलैन। काजक पूर्ति भेने जहिना मनमे तृप्तिक अंकुर जनमैए तहिना पत्नीक हाथमे चाह देख जीतू काकाकेँ भेलैन। बिहुसैत पत्नीक चेहरा देख अपनो बिहुसए लगला आ बिहुसैत बच्चा जहिना माएकेँ देख नजैर गड़बैए तहिना जीतू काका अपन आँखि पत्नी हाथक चाहक गिलासपर गड़ा देलैन। चाहक गिलास दहिना हाथसँ पकड़ैत जीतू काका बामा हाथसँ चौकीपर बैइसैक इशारा पत्नीकेँ देलैन। चाहक पहिल घोंट लैत जीतू काका पत्नी दिस तकला। ओना, जीतू कक्काक मन चाहक खुशीमे खुशियाएल छेलैन मुदा सुखनी काकीक मन तरैस गेलैन जे भरिसक चाहमे किछु गड़बड़ अछि तँए ओ चाह बनबैक प्रक्रिया दिस मनकेँ दौड़बए लगली। तही बीच जीतू काका बजला-

“बड़ सुन्नर चाह बनेलौं हेन। आइ बुझि पड़ैए जे नानी-माइक देल लुइरिक उपयोग केलौं।”

जीतू काका अपना मने बजला, किए तँ साए बीघाक पोखैरमे एक रंगक बीज रहने एकरंग कमल तँ फुला सकैए मुदा साए मनमे साइयो रंगक फुलाइक सम्भावना नइ भऽ सकैए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैत अछि।

‘नानी-माइ’क नाओं सुनि सुखनी काकीक मन तुरुछ गेलैन। तुरुछबो सोभाविके छल। किएक तँ धन-सम्पैत हुअए आकि बुधि-अकील, पूर्वजक देलकेँ लोक अपन बुझि हथिया लइते अछि। हथियेला पछाइत तँ ओ अपन भइये जाइ छै जेकरा कियो छीनियो कऽ लऽ सकैए, मांगियो कऽ लऽ सकैए आ चोराइयो कऽ लइते अछि। मुदा सुखनी काकी अपन मनक तुरुछबकेँ अपन जिनगीक खगता दिस मोड़ैत बजली-

“दुर्गापूजा लगिचा गेल, घरमे एकोटा नव साड़ी नइ अछि जे पहिर

भगवतीक खोंइछ भरब।”

ओना, अदहा गिलाससँ बेसी जीतू काका चाह पीब नेने छला। जइसँ चाह अपन चाह पूर्ति करैत मनकेँ सुर-खुर बनाइये रहल छेलैन। जखने मनमे सुरखुरपन जगैए तखने नीक-नीक विचार सेहो जगबै करैए आ तैसंग नीक-नीक काज दिस नजैर सेहो छिटैकते अछि। ओना, अधलो दिस छिटकैए।

साड़ीक नाओं सुनि जीतू कक्काक मन उनटलैन। उनटैक कारण भेलैन जे काल्हि साँझमे जखन जीतू काका अपन समैयक संग परिवारक हिसाब जोड़ए लगला तखन सभ हिसाब समगम बुझि पड़ल छेलैन जइसँ मनमे कोनो तरहक भाव-अभाव नइ खटकल रहैन। माने, काल्हि जखन परिवारक हिसाब जोड़ए लगला तखन भोजनक संग घरो आ वस्त्रोक खगता पूरल बुझि पड़ल छेलैन। बिमारी आ बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ तँ सीमाहीन अछिए तँए ओ अनुमानित हिसाबमे औत। तइले आगूक समयो अछिए आ श्रमो तँ अछिए, तँए अनेरे मन-रोग पैदा करब उचित नहि। ओना, सुखनी काकीक साड़ीक खगता सुनि जीतू कक्काक मनमे मिसियो भरि हलचल किए होइतैन? एक तँ तेहेन साड़ी सभ बनि-बनि बजारमे आबि गेल अछि जे पहिलुका जकाँ कि साले भरिमे दू जोड़ फाटत, सालक कोन गप जे दू-दू, तीन-तीन साल तक ने ओकर रंग उखड़ैए आ ने पाढ़िक कोर झड़ैए आ ने साड़ीक आँचरेमे कोनो फाट-फूट होइए। तैठाम ऐ साल सात खण्ड साड़ीक आमदनी पत्नीकेँ भइये गेल छैन, तखन जँ ओ साड़ीक चर्च कऽ रहली अछि ओ पतिक आगू जे पत्नीक लटारम होइए से कऽ रहली अछि। ओना, लटारम करब उचितो तँ अछिए। किए तँ पतिक आगू जहिना पत्नीक होइत, तहिना ने माए-बापक आगू बेटो-बेटीक होइए। मुदा तेकर तँ अप्पन समय अछि। अखन तँ गामक चौबगली-सीमाकातक गामपर विचार करैक मन बनल अछि तैठाम जँ पत्नीक लटारममे ओझरा जाएब से उचित नहि, मुदा से मुँह

फोरि कहबो केना करबैन। जखने किछु बाजब आ हुनका कानमे पड़तैन तखने ढोढ़ साँप जकाँ फुफकार कटबे करती तइसँ नीक जे झूठ-फूस बजनिहारकेँ झूठे-फूसे काजमे लगा देब नीक हएत।

..यएह सोचि जीतू काका पत्नीकेँ कहलैन-

“अखन दुर्गोपूजा अबैमे समय अछि, तहूमे दस दिनक पूजामे अदहा बीतला पछातिये ने खोंइछ भरब आ साड़ीक खगता हएत, तइले बहुत समय अछि। अखन जे तुकक काज अछि से पहिने पुराउ।”

‘तुकक काज’ सुनि सुखनी काकी चौंकैत बजली-

“से की अछि?”

जीतू काका बजला-

“बुढ़ भऽ गेलौं आ अखन तक एतबो ने बुझै छिऐ जे दुनू कानो आ दुनू आँखियोक बीचमे नाक अछि। चाहक पछाइति पान होइए से अनबे ने केलौं आ बिच्चेमे की-कहाँ एक ढाकी फरमाइस पसाइर देलौं!”

ओना, सुखनी काकीक मन मानि गेलैन जे पतिक मनक डायरीमे साड़ीक खगता दर्ज भेला पछातियो मनमे कोनो उथल-पुथल नइ भेलैन, तँए पूर्ति हेबे करत। चुपचाप दरबज्जाक चौकीपर सँ उठि पान आनए आँगन गेली। एकान्त समय पेब जीतू कक्का मन अपन चौबगली गामपर नचलैन। नचिते सिनेमाक रील जकाँ सुखेत गाम आगूमे एलैन। खढ़चट्टा समय भेने सुखेतमे अकाल पड़ि गेल अछि। जहिना भिनसुरका सुर्ज देखने लोक अनुमान करैए जे आजुक दिन केहेन हएत, तहिना ने सौन-भादोक समय देख सेहो लोक सालक अनुमान कइये लैत अछि जे सालक केहेन गति-विधि रहत। एक सीमामे रहितो सुखेत गामक भौगौलिक बनाबट ओहन ऊँचरस अछि, जे एको धुर जमीनमे एको दिन बर्खाक पानि नहि अँटकल, जइसँ तीमनो-तरकारीक खेती आ अनो-पानिक खेती दोहरी डाँगसँ थौआ हेबे करत किने...।

लगले मन घुसैक गोधनपुरपर गेलैन। गोधनपुर गामपर नजैर पहुँचते जीतू कक्काक मन बिहुसए लगलैन। जहिना गामक नाओं गो+धन पुर तहिना गामक रूपो रंग अछिए। गामक भौगौलिक बनाबट तइ ढंगक बनल अछि जे रौदी हुअ कि दाही, अदहा गाम खुशहाल रहबे करत जइसँ अधोसँ बेसीक रक्षा भइये सकैए। जहिना पुबरिया बाध नीचरसो आ नमगरो-चौड़गर अछि जइमे चारि गामक पानि बहि-बहि आबि जमा होइए तहिना पछबरिया बाध ऊँचरस रहने एको ठोप पानिक छुति नहि रहैए। अपन गाम तँ सहजे अपने गाम छी, अपना जकाँ करबो करै छी, अपने जकाँ रहबो करै छी आ तैसंग अपने जकाँ समाजो तँ अछिए। कोनो कि आब ओ जुग-जमाना रहल जे मुँहगर-कन्हगर आकि जरे-जमीन्दार केकरो गामसँ भगा देत। सबहक अपन गाम छी, अपना जकाँ करबो करैए आ अपने जकाँ रहबो तँ करबे करत...। तही बीच सुखनी काकी पानक सभ समचा नेने दरबज्जापर पहुँच बजली-

"चाह पीबए लगलौं तँए कनी देरी भऽ गेल।"

पान खा जीतू काका पत्नीकेँ पुछलैन-

"साड़ीक चर्च की केने छेलौं?"

जहिना कियो कोनो जगहपर पूछ पबिते अगुआ-अगुआ बाजए लगैए तहिना सुखनी काकी बजली-

"एतबे खानमे बिसैर गेलिऐ?"

अपना मनकेँ सम करैत जीतू काका समहारि कऽ बजला-

"बिसैर जइतौं ते पुछबे करितौं। नीक जकाँ नइ बुझलौं तँए पुछलौं।"

ओना, जीतू कक्काक मनमे आबि गेल रहैन जे तेहेन सोभावक पत्नी छैथ जे जहिना आन-आन विदाइमे साड़ी देने छेलैन तहिना ओहो जेकरा देहपर फटल-फुटल साड़ी देखने हेथिन तेकरा उपकैर-उपकैर दऽ देने

हेथिन आ अपने अपन पहिरबा साड़ीसँ संतोष कऽ नेने हेती।

तैबीच सुखनी काकी बजली-

"कहबे ते केलौं जे दुर्गापूजा आगू आबि रहल अछि, भगवतीकेँ जे खोंइछ भरब तइले एकटा निरवण्ड साड़ी... ।"

जीतू काका बजला-

"भगवतीकेँ खोंइछ भरैले साड़ी चाही आकि अपनो पहिरैले?"

सुखनी काकी बजली-

"दुनू ले ने चाही। घरमे एक खण्ड अछियो ओहो ऐंठे भऽ गेल अछि।"

जीतू काका बजला-

"ऐ साल ते बहुत साड़ीक आमदनी भेल, से सभ की भेल?"

अपन कएल उपकारसँ सुखनी काकीक मन गदगर रहबे करैन। गदराइत बजली-

"लोक अपन पोखैर-इनारक पानिक आशापर जीबैए आकि ऊपर-झापड़ बाढ़ि-बर्खाक आशापर। ओ तँ एक दिससँ आएल दोसर दिस चलि जाएत। जे साड़ी जहिना आएल से तहिना गेल, घरमे थोड़े रहल।"

पत्नीक उदार विचारसँ जीतू कक्काक अपन मनक उदर पूर्ति भऽ गेलैन तँए साड़ीक चर्च छोड़ि गामेक एकटा चर्च शुरू करैत बजला-

"ता अहाँ ऐ गाम नइ आएल रही, तइ समैयक कथा छी। अपना गाममे व्यास काका छला। ओना, जमीन-जाल सेहो भरपूर छेलैन, मुदा पृथ्वी छेदनकेँ पाप बुझैत रहथिन जइसँ खेती-बाड़ी नइ करै छला।"

बिच्चेमे सुखनी काकी टोकि देलखिन-

"खेत रहैत जँ खेती नइ करै छला तँ की हवा पीब रहै छला?"

पत्नीक अगुआएल विचार सुनि जीतू काका हाथक इशारासँ चुप करैत बजला-

“ओ निष्ठित बेकती छला। खेत-पथार लोककेँ बँटाइ दऽ देने रहथिन आ अपने सभ दिन अपन गामक संग चौबगली गाम सभमे दुआरे-दुआरे सभ दिन बैसार करि कऽ गृहवासूकेँ अपन पद्धतिक अनुकूल जिनगीक चक्र बुझबै छला। बुझेला पछाइत जखन घरमुहाँ होइ छला तखन घरवारियो आ आरो-आरो जे सुननिहार सभ रहै छल ओ दुनू परानी-जोकर सिदहा दऽ दइ छेलैन। वएह सिदहा घरपर आनि पत्नीकेँ सुमझा दइ छेलखिन।”

पतिक विचारमे सुखनी काकीकेँ की भेटलैन से तँ सुखनीए काकी जनती, मुदा मन चपचपेलैन से जीतूओ कक्काक नजैर पड़लैन।

सुखनी काकी बजली-

“असल परिवारक भक्त व्यास काका छला किने?”

ओना, जीतू कक्काक मनमे जे मूल बात छेलैन ओ अखन तक नहि निकलल छल तइसँ पहिनहि सुखनी काकी अपन निर्णय सुना देलखिन। विचारकेँ पाछू दिस ससाइर जीतू काका बजला-

“पहिने सभ बात सुनि लिअ, पछाइत जे मन फुरए से बाजब।”

सुखनी काकीक मनक चपचपी एतेक बढ़ि गेल छेलैन जे जे किछु जीतू काका बजितैथ ओकर जवाब ठोरेपर बरी बनब जकाँ दइले तैयार छेली। बजली-

“की सभ बात?”

जीतू काका कहलखिन-

“एक परिवारक कोन बात जे अनेको परिवारक सिदहा व्यास काकाकेँ भेटै छेलैन। साँझू पहर जखन सौंझुका नित्य कर्मसँ निवृत्त भऽ

गायित्री बन्धन करए लगै छला आ पत्नीकेँ सिदहाक विषयमे पुछै छेलखिन तखन पत्नी सभ दिन एके उत्तर दइ छेलैन जे अखुनका सिदहा खर्च भेला पछाइत मुड़ी छोपि कऽ एक तम्मा काल्हियो-ले रहत। ओना, 'मुड़ी छोपल तम्माक चाउर' सुनि व्यास कक्काक मन झुझुआ जाइन, मुदा जहिना कोसीक बाढ़ि हुअए कि गंगेक किए ने हुअए आकि लहैरबला समुद्रेक किए ने हौउ मुदा जहिना अथाह पानिमे उग-गुम करैबला चुट्टियोकेँ जखन कोनो खढ़-पातक सहारा भेट जाइ छै आ ओकरा पकैड़ ओ अपन जिनगीक रक्षाक आशा मनमे रोपि जीबए लगैए तहिना व्यास काकाकेँ छेलैन। किएक तँ ओ समाज रूपी समुद्रमे डुमकी लगा-लगा हीरा-मोती खोजि-खोजि अनै छला आ समाजक मुँहमे दइ छला जइसँ अपनो मुँहक अहरा बनले रहै छेलैन। तहूमे हुनकर विचारक संग बेवहारिक दुनियाँमे सेहो छेलैन्हे जे जे मनुख अत्यन्त खगता छोड़ि जँ चुटकियो भरि घरमे चोरा वा जोगा कऽ रखै छैथ ओ मनुख-विरोधी तत्त्व भेल। तँए ओहन निकृष्ट जिनगीसँ अपनाकेँ परहेज राखी। तहूमे एहेन आशा सेहो मनमे छेलैन्हे जे औझुका जिनगी-ले ने आइ छी, कौल्हुका-ले तँ काल्हि अछिए तैबीच जँ मनमे कोनो तरहक चिन्ता-फिकिर होइए तँ ओ बचपना भेल। तहूमे बारह घन्टाक सुर्ज पहरूदारक समय सेहो कटिये गेल, शेष चन्द्र पहरूक सेहो एक पहर खपिये गेल, बाँकी जे अछि ओ तँ नीनीयो देवीक स्थानमे चैनसँ बीता सकै छी... ।"

विचारक चैन अबिते जीतू कक्काक मनमे अपन परिवार जगलैन। जगिते विचार उठलैन जे साड़ी तँ शरीर-रक्षक भेल, से तँ पत्नीकेँ छैन्हे। साल भरिक पुरान साड़ी रहितो ने केतौ मसकल-मुसकल छैन आ ने कोर-पाढ़ि केतौ उघरल छैन तखन तँ भेल जे दुर्गापूजामे भगवतीकेँ खोंइछ भरती तइले साड़ी चाहिऐन... ।

पत्नी आ भगवतीक आसन बीच अपनाकेँ स्थापित करैत जीतू

काका बजला-

“अहाँक मनेमे चोर बसि गेल अछि तइसँ मन हहिया गेल अछि, तँए कनी..?”

‘कनी’ सुनि सुखनी काकी झिझकैत बजली-

“भगवतीक खोंइछ भरैक प्रश्न ने अछि।”

पत्नीक विचारकेँ ठमकैत देख जीतू काका बजला-

“ऐ साल अखन तक केते साड़ीक आमदनी भेल अछि आ देह छोड़ि घरमे एक्कोटा ने अछि, ओ की भेल? अहाँ नहियोँ कहब तैयो हम बुझबे करै छी जे केकरो दऽ देलिऐ। नीक केलौं, साड़ी पहिरैक वस्तु छी, ई तँ नहि जे जहिना परदेशिया सबहक घरवालीकेँ देखबै जे साए-साए, डेढ़-डेढ़ साए जोड़ साड़ी चौपेत कऽ ट्रंकमे रखने रहत आ कहत जे साड़ी अछिए नहि। एक-दिन–आध-दिन जे पहिरलक ओकरा ओ ऐंठ बुझि रखने रहैए।”

ओना, जीतू कक्काक विचार सुनि सुखनी काकी सहमली मुदा दुनियोँ तँ देखा-देखीक छीहे। लोक नीको देखैए आ अधलो देखैए। दुनियाँमे जे कोनो पैघ-पैघ घटने वा अनुसन्धाने होइए ओकरा मनुख मात्र खोज-पुछारि करैए, केतौसँ आनि कऽ थोड़े दइए। तँए जहिना दुनियाँ अधलाक देखा-देखी करैए तँ ओकरा नीकोक देखा-देखी करैले दुनियाँ अछिए। सामंजस करैत जीतू काका बजला-

“गुमकी लधने नइ ने हएत।”

सुखनी काकी बजली-

“अखन आसिनक अन्हारक अष्टमीए छी, एक पनरहिया तँ बीचमे समय अछि, ताबे अहूँ ओरियान करू आ हमहूँ धृत धड़ै छी।”

सुखनी काकीक ठमकैत मन देख जीतू काका बजला-

"जहिना व्यास काका एक तम्माक आशामे दुनू परानी एते नमहर जिनगी जीब लेलैन तहिना अपनो सभ हँसी-खुशीसँ भगवतीक खोंइछ दुर्गापूजामे भरबे करब।"

❑ **साभार :** गपक पियाहुल लोक

# एक घोंट पानि

बहत्तैर बर्खक वयसमे विलास बाबू अपन पैंतीस बर्खक संसदीय जिनगीक संग पचपन बर्खक राजनीतिक जिनगीकेँ तिलांजलि दैत, बिना किछु केकरो कहने घरसँ निकैल गेला। जेना गाम-घरमे होइए जे कोनो बाते दुनू परानीमे झगड़ा भेने एक परानी नैहरक बाट पकैड़ नैहर दिस विदा ई सोचि भऽ जाइ छैथ जे भीखो-दुख मांगि माइयो-बापक सेवा करब, मुदा एहेन घर आ घरबलाक मुँह नइ देखब। ओना, विलास बाबूकेँ से नइ भेलैन, मुदा एते तँ भेबे केलैन जे एतेटा दुनियाँ अछि, तइमे एते बड़का-बड़का समुद्र अछि, पानिक भण्डार अछि तखन हमरा एक घोंट पानि नइ भेटत जे मरि जाएब, तखन अनेरे किए एहेन जिनगी बनौने जा रहल छी जे जैठाम मनुखक सेवाक उदेससँ कौलेजक जिनगीमे राजनीतिक जिनगीक बीच पएर रोपलौं, जे अबैत-अबैत आइ ने लगमे एकोटा लोक बिसवास पात्र अछि आ ने लोके आकि परिवारेक बिसवास पात्र अपने बनल रहलौं..!

यएह सभ विचार विलास बाबूक मनकेँ तेना ने ममोरि देलकैन जे एक घोंट पानिक आशा करैत वेरागी-सन्यासी जकाँ घरसँ निकैल गेला।

ओना, ने केकरो–समाजसँ लऽ कऽ राजनीतिक संगी तककेँ ऐ बातक जानकारीए देलखिन आ ने केकरोसँ विचारबे केलैन। तइसँ कियो

किए बुझत जे विलास बाबू पैछला जिनगीक सभ किछु छोड़ि नव जिनगीक खोजमे घरसँ निकैल गेला। तँए अपना मनमे नव विचारक नव दशा-दिशा रहितो आन लेल–माने अखन धरिक संगियोँ-साथी आ कुटुमो-परिवार–ओहिना छैथ जहिना अखन धरिक जिनगी अङेजने आबि रहल छला...।

घरसँ निकलला पछाइत विलास बाबूक मनमे एलैन जे जखन पैछला जिनगीक सभ किछु छोड़ि देब तखन केकरो ऐठाम जाएब उचित नहि। ओना, जिनगी जेहेन हुअए मुदा खाइ-पीबैले अन्न-पानि, रहैले घर, पहिरैले वस्त्र चाहबे करी, से तँ सभठाम राखल नइ अछि, जे जेतै मन फुरत तेतै रहि जाउ आ सभ किछु आगूमे मौजूद रहत। ओना, दुनियाँ अही सभसँ भरल अछि मुदा तैयो तँ अपना-ले सभकेँ अपन-अपन ठौर-ठेकान बनबैए पड़ै छइ।

घरसँ निकैल रस्ता टपैत विलास बाबूक मनमे उठलैन– जखन सभ किछु छोड़ि एक घोंट पानिक आधार बना जीबैले ठानि लेलौं, तखन अनेरे किए छिछिआएल घुमब। से नइ तँ भने पीपरक गाछ रस्तापर ऐछे, ऑक्सीजनक भण्डार छीहे, एतै किए ने चैनसँ अरामो करब आ रस्तो ताकब...।

ई तँ गुण रहलैन जे ने रस्ताकातक माइल-स्टोनपर नजैर गेलैन आ ने मोबाइले-घड़ी संगमे रहैन जे तइसँ मिला माइलिक अन्दाज कऽ लितैथ। फेर अपने मन कहलकैन–

“धुर बतहा! वौआइत-वौआइत सौंसे दुनियाँ वौआ एमे, मुदा दुनियाँ देखबे ने करबीही।”

विलास बाबूक पहिल मनक विचार दोसर-तेसर मन सेहो मानि लेलकैन।

आगूमे पीपरक चतरल गाछ, हवा तँ नइ बहैत रहै मुदा अपने फुरने पीपरक पात हिलैत-डोलैत रहइ। नमगर-पातर डण्टी रहने आकि की, मुदा हिलैत-डोलैत जरूर रहइ। ऑक्सीजन-पर-ऑक्सीजनक बिलहा-बाँट होइते रहइ। ऑक्सीजन पबिते विलास बाबूक नजैर ऑक्सीजनक जड़ि दिस बढ़लैन। गाछ-बिरीछ अपन साँस ऑक्सीजन छोड़ैए...। फेर अपने मन पुछलकैन–

"की पीपरे गाछटा ऑक्सीजन छोड़ैए आकि आरो-आरो गाछ छोड़ैए?"

एक आ एकसँ अधिकक बात उठिते रंग-रंगक विचार विलास बाबूक मनमे उठए लगलैन। दोसर मन बिच्चेमे तराक-दे बाजल–

"आमोक गाछ तँ ऑक्सीजन छोड़ते अछि, तैसंग खाइले आमो तँ दइते अछि। आ तेतबे किए, मरि गेलापर सेहो अपन लकड़ीक हवन करैत माघक जाड़ोक रक्षा आ खेबा-पीबाक ओरियानोक संगी तँ ऐछे, मुदा पीपर तँ से नइ अछि। सुगरक गोबर जकाँ ने नीपै-जोकर आ ने पोतै जोकर।"

मनक बतकटौबैलमे विलास बाबूक मन ओझरा गेलैन। ओझराइते एकटा मन भनभनेलैन–

"जेकरे डरे भीन भेलौं सएह पड़ल बखरा। भाय, जखन घरसँ निकैल गेलौं तखन अनेरे घुरमुरियामे घुरिआइ छी।"

मनक धिक्कारसँ दोसर तेसर मन ठमकलैन। ठमैकते पहिल मन विचार देलकैन–

"भाय, दुनियाँकेँ एना नइ ने चीनबीही। ओकरा तँ ऐनामे रखि, चेहरा देखने ने चीनबीही।"

मनमे उठिते विलास बाबू गाछ-बिरीछकेँ धड़ियाबए लगला। धड़ियेलैन ई जे केते रंगक गाछ-बिरीछ अछि जे ऑक्सीजन दइए। तइ

धारीमे तुलसी, पीपर, बड़, पाखैरक संग नीमो नजैर पड़लैन। नीमपर नजैर पड़िते मन फेर भिनभिनेलैन–

“ई केना भेल! तीतहा गाछमे मीठ फल केना लगि गेल?”

कोनो गरे जे हिसाब विलास बाबू जोड़ैथ से हिसाबे ने मिलैन। अकैछ कऽ मन अकछा गेलैन मुदा हिसाब नइ सोझरेलैन। कखनो पात दिस नजैर बढ़ैन तँ पीपर, बड़, पाखैरक पात छह-छह करैत आँगन जकाँ चिक्कन बुझि पड़ैन, तँ लगले नीमपर नजैर पड़िते होइन जे ई केना भेल। टुकड़ी-टुकड़ी पात जहिना कटल अछि, तहिना सौंसे देहक सिर झकझक करै छइ। मुदा लगले मन आगू घुसैक कऽ सिरपर पड़लैन। नीमक सिर मुसरा बनि माटिक बीच अपन माटिक ऊपरक चढ़ल गाछक समतूल भार उठौने अछि, जखन कि एकरा सभकेँ माने बड़, पीपर आ पाखैरकेँ मुसरा-सिर होइते ने अछि। जल्ला सिर होइए, जइसँ घरतीक ऊपरके भागमे घुरियाएल घुमैए। कनियेँ हवा-विहाड़ि उठने अर्ड़ा-अर्ड़ा खसैए। भलेँ मने-मन गुड़-चाउर किए ने फाँकह जे माटिकेँ माइट कहह जे अकासमे उठल गाछक डारियोमे हमर सिर जनमैए...। विलास बाबू जेते गाछक ऑक्सीजनक विचार करै छला तेते अपन ऑक्सीजन घटित होइत गेलैन। घटैत-घटैत एकटा आड़ि धऽ अँटकलैन। अँटैकते मनमे उठलैन–

“एना नै फड़ियाइत, तँए कोन-कोन गाछ-बिरीछ अछि जे ऑक्सीजनो दइए आ आनो-आन साधनसँ मनुखकेँ वा अन्यकेँ जीबैक उपाय करैए।”

मनमे ऐबते विलास बाबूक मन शान्त भेलैन। ओना, एक तँ रस्ताकातक पीपरक गाछ, तैतर असगरे विलास बाबू बैस मने-मन अपन शेष जिनगीकेँ चलबैक बाट ताकि रहला अछि। मुदा गाछक ऑक्सीजनेमे तेना ओझरा गेला जे सोचै-विचारैक ने सस चलैन आ ने

कोनो बसक बासे होइन...।

मुदा किछु छी, छी तँ पीपरक गाछ किने, जेकरा पचांगम सेहो कहल जाइ छइ। जेकर जड़िसँ लऽ कऽ छीप धरिक सभ किछु शिवमय अछि...।

लगले फेर विलास बाबूक मन चाणक्य जकाँ चनकलैन। चनैकते भेलैन जे समस्या जँ मनकेँ खा गेल, माने मनक विचारकेँ समस्या पछाड़ि देत तखन मन उठि कऽ चलत केना? समस्या तँ पनचानबे-छियानबे प्रतिशत मनुखे निर्मित छी, बाँकी परोछ सत्ताक छी। जेकरा दैवी सेहो कहल जाइ छै...।

फेर भेलैन जे किछु समस्या एहनो अछि जेकर सामना नइ कएल जा सकैए, मुदा अपन आक्रान्त जिनगीकेँ पुनर्निमित तँ कएले जा सकैए। आ तेतबे किए, ओकर अध्ययन करैत ओकर समाधानक हल्लुक-सँ-हल्लुक उपायक बाटो तँ तकले जा सकैए...।

हृदयक साँस जेना विलास बाबूक छुटलैन। छुटिते मन हल्लुक भेलैन, हल्लुक होइते, जाड़मे शीताएल फूल कहियौ आकि पानिमे नहाएल चिड़ै जहिना एक पाँइख आ दोसर पंखुड़ी फड़फड़बए लगैए तहिना विलास बाबूक मन सेहो फड़फड़ेलैन। फड़फड़ाइते चाणक्यक कुश-उखारपर नजैर पड़लैन आकि फुलाइत विलास बाबूक मन फलैक उठलैन–

"चाणक्यो बड़ रगड़ी छला।"

दोसर मन आगू बढ़ि सह देलकैन–

"तइसँ की कम झगड़ी छला।"

तेसर बाजल–

"रगड़ी-झगड़ी बिना बनने कियो पगड़ी बान्हि लेत।"

चारिम बाजल–

“रगड़ी, झगड़ी पगड़ीक भाँजमे अनेरे पड़ै छह, सभ संगे-संग रहबो करह आ दिवसो गुदस करह।”

बेथाएल विलास बाबूक बेथित मनमे विचड़लैन। विचैड़ते उठलैन–

“गाछ-बिरीछक ऑक्सीजन।”

ऑक्सीजन ऐबते मन गुम्हरलैन। गुम्हरलैन ई जे अनेरे कोन महजालक भाँजमे पड़ए चाहै छी, दसे-बीसटा गाछ-बिरीछ थोड़े अछि जे ओकरा ठिकिया कऽ बुझबै जे फल्लाँ-फल्लाँ बेसी आक्सीजन दइए आ फल्लाँ नीक फल आ फल्लाँ ऑक्सीजनक बदला ऑक्सीजनेकेँ विगाड़ैए तँ फल्लाँ ऑक्सीजन लैये कऽ मेघ दिस पड़ाइए। ओह! अनेरे मनकेँ वौआबै छी...।

विलास बाबूकेँ मन पड़लैन अपन संकल्प। जखन एक घोंट पानिक आशापर सभ किछु छोड़लौं तखन अनेरे गाछ-बिरीछक ओझरीमे पड़ै छी। जेते फल खाएब आकि ऑक्सीजन लेब, तेतबेक खगता ने अछि। तइले अनेरे दुनियाँक बोन-झाड़मे मनकेँ वौआबै छी...।

मनमे चैन एलैन। चैन ऐबते मन चनयेलैन। चनियाइते चनचनेलैन–

“असगरे केना जीब।”

‘असगरे केना जीब’ मनमे ऐबते विलास बाबू उठि कऽ ठाढ़ भेला। मुदा ठाढ़ हएब आ चलैत ठाढ़ रहब, दुनू दू भेल। मनमे ऐबते विलास बाबू दोसर संगी संग चलबाक विचार जगलैन। मुदा जखन पैछला जेते संगी-साथी छल, से छोड़ि ने घरसँ निकललौं! जखन संकल्पक संग निकैल गेलौं, तखन घुमि कऽ ओमहर नइ ताकब...।

उत्प्रेरित करैत मन विचार दऽ देलकैन–

“संगियोँ भेटब की असान अछि! एक संगी ओहन होइए जे सून-बिसुन पेब घरोवालीकेँ लऽ भगैए आ एक एहनो तँ होइते अछि जे रणभूमिमे रक्तक धार बनि रहैए... ।”

मन मानि गेलैन जे से तँ अछिए। तखन? तखन तँ यएह ने जे संगीक संगपनाक जेते खगता अछि तइले संगी चाही मुदा ओहन उट्ठा संगी जखन भेटत तखने ने समैयक हिसाबसँ संग पुरब... ।

मन पत्नीपर गेलैन। दू समाज मिलि संगीक हाथ पकड़ा संग धरा देलैन, मुदा से बनाइन कहाँ भेल? कहियो मनक तृप्ति कहाँ भेल? जँ से होइत तँ दोसर बिआह करैक जरूरते होइत। कहू जे ई केहेन भेल जे अपने पत्नी आ बाल-बच्चा कपार फोड़ैपर लागल अछि..!

मन थकथका गेलैन। पीपरक गाछक निच्चाँमे ठाढ़ विलास बाबूक पएर आगू बढ़ैले तैयारे ने होइन। असकताएल जकाँ पएरक शक्ति, आगू उठैले तैयारे ने होइन। असकताइत पएरकेँ रपैट कऽ वीणाक वाणी कहलकैन–

“एहने पग, जेकरा डण्डिये ने! बिना पगडण्डिये बाट बनै छै आ चलनिहार चलैए?”

विलास बाबूक दोसर मन कनखरलैन। कनखैरते उठलैन–

“जहिना भक्तक पाछू भगवान वेहाल तहिना ने भगवानक पाछू भक्तो वेहाल रहैए। जे धरतीकेँ अपन बुझि छाती लगौत तेकरे ने धरतियो अपन बुझि छातीक दूध पिऔत।”

मनमे नव उत्साहक संग नव जिनगीक उत्प्रेरित विचार सेहो जगलैन। बिनु संगीक संग भेने जीवियो तँ नहियेँ सकै छी। ओना, संगियोँ केतेको रूपमे संग पुड़ैए। गुरु बिनु चेला आ चेला बिनु गुरु जहिना असम्भव अछि तहिना दिनक संगी राति आ रातिक संगी दिन नइ अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तखन दूध-पानि बेराएब जटिल तँ

अछिए। बिनु पानियेँ दूध बनबे केना करत, जे ओइमे पानि फेंट पाइ बना लेब...।

विलास बाबूक ठाढ़ मन ठेहिया गेलैन। संगी बिनु बनत नइ आ संगी सभकेँ छोड़ैक संकल्प मनमे बान्हि लेलौं..! फेर भेलैन जे जइ जिनगीक संगी ओ सभ छला, ओ जिनगी जखन बदलैए चाहै छी, तखन तँ नीक हएत जे ओहो सभ अपन जिनगी बदैल फेर संगी भऽ जाए। मुदा मनक ऐना झलकलैन। झलकलैन ई जे अपन केहेन जिनगी ठाढ़ भेल से तँ मनेमे अछि, आ संगी बदैल संग औता से सोचि रहल छी। एकरे ने लोक बचपना कहै छै...।

लगले दोसर मन रपटैत कहलकैन–

“यएह छी बतहपनी। दिन-राति बड़बड़ाइत रहब आ करनी चलोले ने हएत, तखन केहेन घर आ घरनी पाएब, से तँ धुनियाँक धुनैबेर ने बुझब।”

विलास बाबूक मन ओहन धरतीपर पहुँच गेलैन जेतए कोनो बाटे ने सुझैन। ठाढ़सँ बैस गेला। बैसते चित्त चेतबैत कहलकैन–

“संगी दू रंगक होइए, एकटा होइए भेटुआ आ दोसर होइए गढ़ुआ। गढ़ुआक माने भेल जे संग-संग जीवन गढ़ैए। आ भेटुआ ओ भेल जे केतौ जाइ छी, रस्तामे जे भेट कऽ संग भऽ गेला। मुदा दुनूक फलाफल दू रंगक अछि। भेटुआ जँ हेरा गेल तँ ओते मन नइ दुखाइए जेते गढ़ुआकेँ हेरेने दुखाइए। ”

गुम-सुम विलास बाबू पीपरक गाछक निच्चाँमे बैसल अपन काल्हि धरिक जिनगीकेँ सौरखी-करहरक गाछ जकाँ पानिक ऊपरक पातकेँ पकैड़ नाल पकड़ैत जड़िमे पहुँच हँथोरि फड़ कियो देखैए, तहिना हौंथरैत अपन जिनगीकेँ विलासो बाबू देखलैन। देखलैन ई जे जखन कौलेजमे पढ़ैत रही, सड़कपर चलैत कौलेजेक छात्रा संग छेड़खानी भेल, जेकरा

विरोधमे जे छात्र आन्दोलन भेल, जइमे जेल गेल रही। जेल गेनिहार तँ दर्जनो संगी भेला, जइमे विकासक संग जे अपनत्व बनल, ओहन दोसरक संग नइ बनल। मुदा कौलेजक पछाइत जे दुनू गोरे अपन दुख-धंधामे लगलौं से बीचक जिनगीकेँ खाली बना देलक। तँए नीक हएत जे पहिने विकास ऐठाम जाइ...।

विकास कुमार आ विलास कुमार दुनू सी.एम. कौलेज दरभंगामे आइ.ए.सँ लऽ कऽ एम.ए. तकक संगी।

उन्नैस सए सरसैठक राजनीतिक हवामे दुनूक बीच उभार एलैन। ओना, दुनू राजनीति शास्त्रसँ एम.ए. केने रहैथ। मुदा एम.ए. आकि बी.ए.मे जँ एक दिस निचला श्रेणीक अपेक्षा विषय-वस्तु कमैए तँ दोसर दिस ईहो तँ होइते अछि जे समटले विषयमे छिड़ियाएलो विषय रहिते अछि। ओइ छिड़ियाएल विषयमे विलास कुमारक जे विषय रहैन तइसँ भिन्न विकास कुमारक रहैन। मुदा दुनू गोरेक विषयमे किछु एहेन विषय रहैन जे मन-लग्गु रहैन आ किछु एहेन रहैन जे मन-घिच्चु रहैन आ किछु एहनो रहैन जे मन-छिप्पू सेहो रहैन। तहीमे दुनूक मन दू दिस भऽ गेलैन।

जे विषय विलास कुमारक मन-लग्गू से विकास कुमारक मन-छिप्पू आ जे विषय विलास कुमारक मन-छिप्पू ओ विकास कुमारक मन-लग्गू। तइसँ किलासमे दुनूक पहचान तँ बनल मुदा दू शिक्षकक बीच। जइसँ एक-दोसरक संगियोँ-साथी बिलैग गेल। ओना, किछु छात्र संगी विकास कुमारकेँ चिन्तू भाय कहैन। चिन्तू भाय ऐ दुआरे कहैन जे किलासमे केता दिन प्रोफेसर पढ़बैक क्रममे बजै छला जे जे चिन्तन (Though) सन कठिन विषयक पकड़ विकासक अछि, ओ अद्भुत अछि। छात्रक बीच परीक्षण, ट्यूटोरियल क्लासमे सभकेँ सभ देखबे करै छला।

ओना, बिहारेटा नइ, सौंसे देशमे शासनक विरूद्ध हवा उठल। मुदा

ओ हवा कोनो एकरंगक नइ रहइ। गजपट हवा, जइसँ सत्ता पार्टीकेँ तँ धक्का लगबै कएल, मुदा धक्का देनिहार बीचक पार्टीमे वैचारिक समरसता नइ। ओना, सभ राज्यक अपन-अपन समस्यो रहै आ विचारो रहै, मुदा रहै तँ सभठाम सत्ताक विरोधेमे।

बिहारी हवामे विलासो आ विकासो कुमारक उभार आएल। सरसैठक चुनावमे सत्ता बदलल।

1972 इस्वीक चुनावमे विलास कुमार विधान सभा पहुँच गेला जखन कि विकास कुमार परिवारसँ लऽ कऽ समाजक बीच जे कुसंस्कारी-बेवहारक जाल पसरल अछि, ओइ जालमे ओझरा गेला। जइसँ ई भेल जे परिवारक संग-संग गामे नीक-अधलाक बीच ओझरा गेल। जेकरा विकास कुमार शुभ संकेत बुझि अपनाकेँ ओइ ओझरीकेँ सोझरबैमे लगि गेला। मुदा अखनो धरि वएह निष्ठा आ समर्पण छैन, जे शुरूक जिनगीमे छेलैन। मुदा हवा-विहाड़िमे उड़ि-उड़ि विलास कुमार सत्तामे सटले रहला, भलेँ दर्जनो बेर किए ने पार्टी बदललैन...।

पीपरक गाछतर बैसल विलास बाबूक मनमे उठलैन– संगी तँ सस्तामे अपने भेटबो करैए आ छुटबो करैए मुदा केकरो ऐठाम नइ जाएब, निर्णय करब अनुचित अछि। जँ केकरो ऐठाम नइ जाएब तखन संगी के हएत, बिनु संगीक चलि केना सकै छी। जखन चलिये ने सकै छी तखन अथबल बनि जीविये कऽ की करब। तँए केतौ-ने-केतौ तँ जिनगीकेँ अड़ियाबै पड़त, बिनु अड़ियेने चलब शुरू केतएसँ करब। तहूमे दुनियाँक कतियाएल बीचमे ठाढ़ छी...।

मन ओझरा गेलैन। ओझराइते नजैरपर एलैन अपन जिनगी। अपन जिनगी नजैरमे ऐबते जेना मनमे नव वस्तु भेटलैन। भेटते कौलेजक गढ़ुआ संगी विकास कुमारपर नजैर गेलैन। जाइते मन पड़लैन जे दुनू गोरे जहलमे विचारने रही जे संगी बनि दुनू गोरे संग-संग जिनगी

बिताएब। मुदा ओ तँ छुटि गेला..!

लगलेमे विलास बाबूक मन आगू बढ़ि जहल जाइक कारणपर गेलैन। छात्राक ऊपर भेल छेड़खानीक विरोधमे दुनू संगी बनि जहल गेल रही। नारी अत्याचारक विरोधमे।

मुदा अपने जे अछैते पत्नियेँ बिआह कऽ लेलौं, की ई नारी अत्याचार नइ भेल? अपनो परिवार अछि, जइमे पत्नी आ बाल-बच्चा सभ अछि तखन..?

अनुचित भेल। मुदा उपाय?

लगले विलास बाबूक मन अनुचितसँ आगाँ बढ़ि उचितपर चलि गेलैन। आइ जेकरा मन अनुचित मानि रहल अछि ओ ओइ दिन किए ने बुझलौं। एम.ए. पास तँ तहू दिनमे रही। चूक केतए भेल..?

बोनमे वौआइत बटोही जकाँ विलास बाबूक मन अपन जिनगीक उचित-अनुचित रस्ताकेँ पकैड़ जखैन पैछला जिनगीमे किछु डेग आगू बढ़ला, तखन देखलैन जे समैयक हवाक धारमे भँसिया गेलौं। भँसिया ई गेलौं जे अपनासँ पछुआएल लोकक जिनगीकेँ अपना छातीमे नइ सटाएब तखन अपन प्रगतिशीलते की रहल। मुदा के केकरा छाती लगाबए ईहो तँ एकटा जटिल प्रश्न अछिए। जँ अपना पत्नी, बाल-बच्चा नइ रहैत तखन जँ पछुआएलकेँ उठा छाती लगैबतौं तखन अपनो मन कहैत आ आनो कहैत जे एकटा गिरल (खसल) परिवारकेँ उठैक अवसर भेटल। मुदा से कहाँ भेल। तखन की भेल? मुदा, अखनो अपन मन ई कहाँ चाहैए जे अनुचित भेल। किछु लोक तँ नीक कहिते छैथ...।

थकिआइत विलास बाबूक मन थथमारि अपन जिनगीक विचार करए लगला। भकुआएल लोककेँ जहिना भक्क खुजिते करियाएल दुनियाँ फरिच देखैमे आबए लगै छै तहिना भेलैन। फरिच होइते मन कहलकैन–

“हर मनुखकेँ जिनगी चाही, तैबीच खाँच-खरोंच किछु-ने-किछु

अधिकांशकेँ ऐछे, जइसँ अतीतक पतीतमे पहुँच गेल अछि, जँ ओकरा भैरसक पवित्रक ढंग धरौल जाए तँ निसचित कल्याण हेबे करत।”

मुहसँ निकैलते विलास बाबू नमहर साँस छोड़लैन। साँस छुटिते मनमे एलैन जे सही-गलतीक बीचक रस्तासँ जिनगी चलैए। जेते सही तागैतवर अछि तइसँ कनियेँ कम माने लंकाक उनचास हाथ जकाँ गलतियो तँ तागैतवर अछि, तहूमे हवाक जे झोंक उठै छै, ओ मनुखक कोन बात जे देशक-देशकेँ करवनो सही दिशामे तँ करवनो विपरीत दिशामे तेना ठेल दइए जेकरा भरपाइ करैमे पीढ़ियो समाप्त भऽ जाइए। तखन?

अपन कृत्य तँ आइयो जीवित अछि जे ओहन छेड़खानी आजुक कौलेज-जिनगीमे नइ अछि। विकास भाय हमर बाल संगी छैथ, जँ हुनका ओतए जाएब तँ जरूर ओ छाती लगा एक घोंट पानिक आग्रह करबे करता...।

मनमे ऐबते विलास बाबू उत्कण्ठित होइत उठि कऽ ठाढ़ भेला। ठाढ़ होइते बुझि पड़लैन जे भरिसक जिनगीक पहिल शुभ दिन छी...।

❑ **साभार :** एगच्छा आमक गाछ

# करतब

सौन मासक पंचमी। भोरेसँ बाला-सुबाला चिकैन माटिक खोभारसँ माटि आनए विदा भेल। सबहक हाथमे एक-एकटा डोमराउ पथिया, जइमे छोट-पैघ चरि-चरिटा मौनी साजल, किएक तँ कुल पाँच बासनक माटिक थुम्हा बनौत। पाँचो बासनक माटिकेँ स्वच्छ पवित्र जलसँ एकठाम सानि पाँचटा थुम्हा बनौल जाएत। ओना, समय निसचित नइ रहने कियो खोभार जाइक तैयारी करैत, तँ कियो रस्तामे जेबो करैत आ कियो-कियो खोभारमे माटि खुनि-खुनि अपन-अपन पथिया-मौनीमे सजेबो करैत, तँ कियो बासन भरि-भरि घरमुहोँ अबैत। संजोग नीक रहल जे ऐबेरक मौना पंचमियो आ सोमवारी व्रतक सोमो एक्के दिन पड़ल। काल्हि रबि छल, सौन मासक पहिल रबि, तँए बाबा विदेश्वरसँ लऽ कऽ कुशेश्वर बाबाक संग बैजनाथ बाबाक मन्दिरमे सेहो भरिपोख जलढरी भेल छल। ओना, जे सभ बैजनाथ आकि कुशेश्वर बाबा ऐठाम गेल छला ओ सभ तँ रस्तेमे छला मुदा जे सभ चण्डेश्वर, विदेश्वर आकि राजेश्वर इत्यादि–लगक स्थान गेल छला ओ सभ काल्हिये घुमि-घुमि घर पहुँचला। आ गाममे जे अजनबी बाबा छैथ ओ तँ गामेमे छैथ, तँए किरिण उगैसँ पहिनहि बहुत लोक जलढार कऽ आबि अपन-अपन जीवनक क्रियाक वृत्तिमे लगि चुकल छला।

दुखमोचन बाबाकेँ ऐ सभसँ–माने पंचमीक थुम्हा, सोमवारी व्रत आ सौनक पहिल रबिसँ कोन मतलब छैन। ओ अपन किसानी जिनगीकेँ संगी बना संगे-संग चलि रहल छैथ। ओना, जमीनक छोट किसान छैथ- सीमांत किसान, मुदा जनसंख्यामे नमहर परिवार रहने जहिना दुखमोचन बाबाकेँ अपन परिवार भरिगर बुझि पड़ै छैन तहिना हल्लुको बुझिये पड़ै छैन। किएक तँ दुखमोचन बाबाक स्पष्ट सोच छैन जे मधुबनी जिलाक जमीन कि कोनो राजस्थानक जमीन थोड़े छी जे पचास-पचास बीघामे लोक सेरसोए-तोरीक खेती करत। एक तँ मिथिलाक माटि तहूमे मधुबनी जिलाक, ऐठाम तँ एक धुरक खेतीसँ मसल्ला आ पाँच कट्ठाक खेतीसँ सालो भरिक तेलक पुरती एक परिवारमे भऽ जाइ छै, तैठाम जँ राजस्थाने आकि गुजराते लोकक सेहन्ता करब से सोहान्त थोड़े हएत। किछु छी तँ मिथिलाक अंग मधुबनी जिला छी किने। मसल्ला आकि तेल पीब लोक कए दिन जीब सकैए, जीबैले तँ अन्न-पानि चाही। सेरसो-तोरी खैहन थोड़े छी, ओ तँ तेलहन छी। खाएर जे छी, जेकर छी से अपन जानह, दुखमोचन बाबाकेँ कोन मतलब छैन। एक तँ किसानी जिनगी छैन तहूमे छोट आँट-पेटक, मुदा जे छैन से छैन, एते तँ आत्मशक्ति छैन्हे किने जे जैठाम एक-सबा कट्ठा जमीन आ एकटा गाए पोसि लोक गुरुआश्रम बना सकैए तैठाम तँ  दुखमोचन बाबाकेँ बहुत छैन। कियो केकरो देखौंस करत तइसँ पहिने ने मनमे दुनूक आँट-पेट–अपनो आ देखौंसो केनिहारक–सेहो अजमा लेत। समैयक हिसाबसँ दुखमोचन बाबा काज करए अपन खेत दिस विदा भेला।

आठ बजेक समय, चौबीस वर्षीय रेहना दुखमोचन बाबाक ऐठाम पहुँचल। भुलनी दादी आँगनेमे छेली। रेहनाकेँ देख भुलनी दादीक देह सिहैर उठलैन। मने-मन भगवानकेँ कोसैत विलाप केली- 'एहने तोहर किरदानी छह जे वेचारीक दिन हेरि लेलहक..!' मुदा मुहसँ किछु ने बजली। आँगनक मुँह लग रेहना ठाढ़ भेल आधा मुँह झँपने आ आधा

उघारने बाजल-

“दादी, हम हिनके शरणमे एलिऐन हेन।”

‘शरण’क माने तँ भुलनी दादी बुझि नहि पेली मुदा ‘एलिऐन हेन’ बुझि लगले बजली-

“की?”

ओना, भुलनी दादी अपन मनक लोक छथिए। अवगुण एतबे छैन जे दुख हुअ कि सुख, लगले बिसैर जाइ छैथ। बिसरबो की बिसरना जकाँ बिसरै छैथ, सोल्होअना बिसैर जाइ छैथ माने केतबो मन पाड़ि कहबैन तैयो ने मन पड़ै छैन। जे अपने तँ नहि मुदा परिवारोक सभ बुझै छैन आ टोलो-पड़ोसक। तँए, जिनका भुलनी दादीसँ काज रहल ओ कण्ठपर सवार भऽ अपन काज अगुआ लइते छैथ। ओना, भुलनी दादीक निर्विकार मन छैन, तँए जे कियो कोनो काजे अबै छैथ ओ अपने तनदेही भऽ पहिने अपन काज हथिया लइ छैथ, मुदा जे पछुएला ओ बिसरनमे उसरन भइये जेता।

भुलनी दादीक मुहसँ ‘की’ सुनि रेहनाक मनक पाँखि निरमए-फरकए लगल। निरैम कऽ फरैकते रेहनाक मन चकभौर लिअ लगल। एकाएक रेहना अपन सोल्होअना मुँह उघारि बाजल-

“दादी, हिनका रामझुमनीक खेती छैन।”

बिच्चेमे भुलनी दादी हड़बड़ाइत पुछलखिन-

“तीमन-ले लेबह?”

ओना, भुलनी दादीक बात सुनि रेहनाक मन मुस्कियाएल, मुदा मुँह दाबि बजली-

“नइ दादी, रोजगार करब तइले।”

‘रोजगार’ सुनि भुलनी दादी अपनाकेँ कारोबारी नहि मानि बजली-

"अखने बाबा खेत गेलखुन हेन, चलह हम कहबैन।"

ओना, दुखमोचन बाबाक नाओं सुनि रेहना सहमल जरूर मुदा भुलनी दादीक बात सुनि निधोख भऽ संगे विदा भेल।

पाँच कट्ठा बरसाती रामझिमनी-खेती दुखमोचन बाबा केने छैथ। ओना, समैयक किरदानीसँ खेती समयपर केलो पछाइत पनरह दिन पछुआ गेल छैन। बरसाती रामझिमनीकेँ समयपर पानिक पियास लगै छै किने, से बरखा नइ भेने बाढ़िमे कमी आबि गेल छेलैन। मुदा राति भरिक हेराएल राहीकेँ जखने भोरक भुरुकबाक भास होइए तखने ने ओकर चान चनैक-चनैक चमकौ लगैए से दुखमोचन बाबाकेँ भइये गेल छैन। खेतक बीचमे ठाढ़ दुखमोचन बाबा अपनो खेती हिया रहल छला आ ओइ सभ किसानपर मने-मन गरमा सेहो रहल छला जे जेसभ सीमान्त किसान अछि। जँ ओकर खेत ऊँचरस छै तँ पानिक ओरियान करि कऽ बरहमसिया खेती पकैड़ बरहमसिया किसान बनि जेबा चाही। तइले तरकारी खेती सेहो अछि आ फलो-फलहरीक संग पानोक खेती कएले जा सकैए आ नहि जँ गहींर खेत अछि तँ माछ-मखान इत्यादि करी। से सभ नहि करि जँ पैघ किसानक देखौंस करब तखन तबाही हेबे करत, जहिना खंजनकेँ हंसक चालि पकड़ने होइ छइ। तहीकाल खेतक आड़िपर अबैत पत्नियोँ आ रेहनोकेँ दुखमोचन बाबा देखलैन। देखते खेतसँ निकैल आड़िपर आबि बैसला।

फरिक्केसँ भुलनी दादी दुखमोचन बाबाकेँ कहली-

"अहींक काज कनियाकेँ छै, तँए भेँट करए आएल अछि।"

झाँपल-तोपल भुलनी दादीक बात सुनि दुखमोचन बाबा झँपले-तोपल बजला-

"केहेन काज?"

काजो तँ काज छी, एकर कि कोनो आड़ि-मेड़ अछि। जँ ऐछो तँ

कोशिकन्हाक बलुआहा माटिक आड़ि जकाँ अछि, जे केतौ पएरे-पएर उड़ि जाइए, तँ केतौ पानिमे डुमल खेत जकाँ पएरे-पएर तेना किचैड़ जाइए जे कदबा-कदबा भेल रहैए, तँ केतौ जिनगीक धुरी बनि सेहो चलैए आ केतौ गप्पक काज बनि मुहेँ-मुँह टहलैत रहैए। खाएर जे जेतए अछि से तेतए रहअ, ऐठाम भुलनी दादी, रेहना आ दुखमोचन बाबाक बीचक बात अछि। जहिना नचार आवेदक अपन आवेदनक अर्जी नचारक संग भोलाबाबाक दरबारमे नचारी गाबि-गाबि मर्जीक लेल लगबैए तहिना रेहना अपन अर्जी पेश करैत दुखमोचन बाबाकेँ कहलकैन-

"बाबा! हिनके दरबारमे आएल छिऐन, शरण दैथ वा भगा दैथ।"

महादेवी वर्माक 'ठुकरा दो या प्यार करो' जकाँ रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाक मन चकराए लगलैन। चकराइत मनमे विचार उठलैन-बीस-पचीस बर्खक औरतक माँग छी। अखन तक एतबो ने बुझि पेब रहलौं हेन जे गामक छी आकि आन गामक, तैबीच कोन सीमापर ठाढ़ भऽ किछु बाजब..? तइ बिच्चेमे भुलनी दादीक मनकेँ सेहो रेहनाक बेथा-कथा धक्का मारलकैन। धक्का लगिते धकियाएल भुलनी दादी पतिकेँ कहलखिन-

"वेचारी दैवक डाँगसँ चुर-चुर भेल अछि तँए अपना ऐठाम आएल अछि।"

'दैवक डाँग' सुनि दुखमोचन बाबाक मनमे जेना अस्सी मनक बोझ पड़ि गेलैन। पड़बो केना ने करितैन। दैवक डाँग छी, कोन दैवक डाँग छी, से की कोनो एकेटा दैव छैथ। अपना सबहक हिसाबे चौरासी लाख देव छैथ आ समुद्रकातबला  सबहक हिसाबे करोड़मे एकटा कम। मनकेँ असथिर करैत दुखमोचन बाबा विचारए लगला जे रूइयाँक विचौलिया जकाँ देव कोनोमे छिड़ियाएल अछि तँ कोनोमे जोगिया अंडी जकाँ

एक्केठाम घोदियाएल अछि, तैठाम किछु भाँज पबैले बीचलाकेँ निकालि धुनि-धुनि कऽ पीर बना पहिने टौकरी आकि चरखामे काटब तखने ने सूत बनत, जइसँ डोरो बनाएब आ डोरासँ वस्त्रो बनाएब, तहिना ओही सूतसँ ने जनेउओ बनाएब आ जनेउ धारक सेहो बनाएब। जने-जन ने बहुजन आ ओही बहुजनमे ने इष्टो जन आ अनिष्ठो जनक बास अछि।

समगम होइत दुखमोचन बाबा रेहनाकेँ कहलैन-

“अखन तक नीक जकाँ अहाँकेँ चीन्हि नहि पेलौं, तँए पहिने अपन परिचय कहू पछाइत जे कहैक हुअए से कहब।”

जहिना शरीरमे कोनो घा-घोस रहने ओइमे चोट लगलासँ बेसी दर्द होइ छै तहिना दरदाएल मनमे सेहो होइए मुदा यएह छी मनुखक विवेक जेकरा बले लोक विचारि लइए जे जिनगीक सुगम बाट की छी आ दुर्गम बाट की छी। मुदा पोखरिक पानिमे जहिना समाढ़सँ कमल धरिक पैदाइस होइए तहिना केचली-कुमहीक नहि होइए सेहो केना नइ कहल जाएत जे पानिक ऊपरे-ऊपर अपन सिर पसारि भकरार गाछ बनि कमलो फूलसँ नमहर डंटीक बीच फूल फुला नइ चमकैए...।

असमंजसमे पड़ल दुखमोचन बाबाकेँ देख रेहनाक आँखिमे नोर भरि आएल। नोरसँ ढबकल नयन ज्योति रेहनाक बकार हरण कए रहल छल। मुदा जिनगीक व्याधाक वाणसँ बेधल हंस जकाँ हुकरैत रेहना बाजल-

“बाबा! अपन घर तँ आगि लगि जरिये गेल, मुदा परिवारो आ समाजोक मुँह देख सभ सहैले तैयार छी, मुदा..?”

जहिना कोनो कथा-कहानीमे कथाकार वा कहानीकार अपन कथा वा कहानीक पूर्वांसेमे कथा वा कहानीक मर्मकेँ धर्म बुझि प्रतिपादित कए दइ छैथ जइसँ पाठक पवित्र मर्मक परिणाम बुझैले उत्सुक भऽ उठैए तहिना दुखमोचन बाबा उत्सुक भेल जा रहल छला मुदा मनेमे जखन

तन-मन जागए लगैन कि जिनगीक खाधिमे विचार लसैक जाइन, जइसँ अपन मनक उद्गार व्यक्त नहि कए पबैथ। होइते अहिना छै जे मर्मभेदी वाणक गति जेतेक गाढ़ सियाहीक रंगसँ लिखलापर रोशनदार होइए ओते घटिया कहियौ कि उड़न्ती सियाहीसँ लिखलापर थोड़े रोशनदार होइए। तँए दुखमोचन बाबा रेहनाक जिनगीक संग जुड़ल बाधापर नजैर अँटकौने अपनाकेँ संयमित करैत रेहनाक 'मुदा'केँ पकैड़ बजला-

"मुदा की?"

अखन तक बाबाक श्रद्धाक विचारे रेहना अपन मुँहपर जे साड़ीक कोर रखने छल, तेकरा हटबैक विचार करए लगली कि बिच्चेमे दुखमोचन बाबाक नजैर पड़लैन। रेहनाक चेहराक मरचुही रूप देख दुखमोचन बाबा सिहैर गेला। मनमे उठलैन, बाप रे! ऐ उमेर मे जँ चेहराक रूप एहेन कुदरूप भऽ जाएत तखन ऐ जिनगीक रंग केहेन हएत? मुदा हजारो-लाखो जिनगीक रूप निहारनिहार दुखमोचन बाबाक मनक सिहरन एकाएक कमए लगलैन। किएक तँ दुनियोँक कि कोनो ओर-छोर अछि, ओ तँ अनन्त अछि। ओही अनन्तमे ने आनन्दसँ आनन्दकेँ पकैड़ कऽ आनबो अछि मुदा से तँ बाधा उपस्थिति भेला पछातिये हएत, जे लगले भाँजोपर चढ़ब तँ कठिन अछि। मनकेँ समटैत दुखमोचन बाबा पियासल बेटोही जकाँ रेहनाक आँखिपर अपन आँखिक ज्योति फेकलैन।

दुखमोचन बाबाक आँखिक ज्योति पबिते रेहनाक आँखिमे पानि पड़ि गेल। पानि पड़िते गुलावक कली जकाँ रेहनाक हृदय कलैश उठल-

"बाबा! गामक तँ यएह सभ ने सिरगर छैथ, हिनके सबहक सिरक परसादे ने हमहूँ सभ जिनगीक दर्शन करब।"

रेहनाक विचार जेना दुखमोचन बाबाक विचारकेँ बेध देलकैन। बेधल विचारमे दुखमोचन बाबाक मन गबाही देलकैन जे एका-एकी पुछब नीक नइ हएत, किए तँ बेथित मनक विचार करब कखन थित रहत

आ करवन बेथित भऽ जाएत तेकर कोनो ठीक नहि अछि तँए किए ने अल्हा-रूदलक महाराइ जकाँ रेहनो-जिनगीक महराइ सुनि ली। मुदा तइले नीक हएत जे सोझे किए ने पुछिऐ जे अपना मनमे जे अछि से बाजि चलू, पछाइत जे सम्भव हएत तेकर जवाब देब आ जे सम्भव नहि हएत सेहो ठाँहि-पठाँहि कहि देब।

दुखमोचन बाबा बजला-

“पहिने अहाँ अपन सभ बात सुना दिअ, पछाइत बुझल... ।”

रेहना दिल खोलि बाजए लगली-

“बाबा, गाममे सभकेँ बुझल छैन जे रेहनाक घरबला राजरोग सँ मरल। नइ उपाय भेल जे इलाज करैबतौं।”

पतिक मृत्युक चर्च सुनि दुखमोचन बाबाक मन चौंकलैन। ओना, हाथमे प्लास्टिकक चूड़ी देख सेहो नहि परखने छला जे रेहना विधबा अछि। लाहक चूड़ी ने लोक फोड़ि लइए, जे फुटैबला होइ छइ मुदा जे फुटैबला नइ अछि से केना फोड़त। मुदा ई भाँज लगि गेलैन जे रेहना गामेक छी... । दुखमोचन बाबा बजला-

“मुँह बन्न नइ करू, जे बजैक अछि से बाजि जाउ।”

जेना सुखमे अनेको संगी अपने-आप भेटै छै तेना दुखमे थोड़े भेटै छै, जे भेटबो करै छै ओइमे अदहासँ बेसी हँसैबला रहै छै आ अदहासँ बहुत कम हँसबैबला... ।

रेहना बाजल-

“बाबा, जखन घरबला जीबै छल तखन दुनू परानी मिलि घर-सँ-बाहर धरिक काज सम्हारि लइ छेलौं, जइसँ तीनटा धियो-पूतो पोसाइ छल आ अपनो दुनू परानीक गुजर चलै छल, मुदा घरबलाकेँ मुइने दुख दोहरा गेल..!”

रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाकेँ जेना हृदयक उष्म साँस निकललैन। बजला-

"अखन तक केना खेपैत एलौं?"

दुखमोचन बाबाक प्रश्न सुनि रेहना थरथराए लगल, मुदा मनकेँ सक्कत करैत बाजल-

"बाबा, हिनकासँ लाथ करबैन से ओहन लाथी हम नइ छी। सुख लोक बिसैर जाइ छै मुदा दुख ओहिना मन रहै छइ। पहिनौं घरबलाक संग चिमनीक ईंटो-पजेबो उघै छेलौं आ खेतो-पथारक काज करै छेलौं, तेतबे नहि घर-जोड़ैयामे सेहो मिसतिरी सभक संग ईंटो-मसल्लो उघै छेलौं, मुदा ओकरा सबहक चालि-चलैन देख मन मानि गेल जे ऐठाम आब बास नइ हएत।"

बिच्चेमे दुखमोचन बाबा बजला-

"तब?"

रेहना-

"जे दिन बीत गेल ओ तँ कटि गेल मुदा आगूक जिनगी समैयक संग चलए सएह ने हिनका कहबैन?"

दुखमोचन बाबा बजला-

"अपना खेत अछि, जँ गुजर करै-जोकर दऽ दी तइसँ पार-घाट लागत?"

रेहना बाजल-

"जहिना करखन्नामे कोनो सामान बनैमे केतेको आइटम काज होइ छै, आ सभ आइटमक काज सभ तरहक करिन्दासँ लेल जाइ छै तहिना ने खेतियो अछि।"

रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाक मन मानि गेलैन जे खेतसँ

पहिने उपजा हएत तखन ने ओकर निकास समाजक बीच हएत, तइले तँ एक आइटमक काज भेल खेत उपजाएब आ दोसर भेल उपजा कऽ बेचब। असगरुआ वेचारी केना सम्हारि पौत। मुदा ईहो तँ अछिए जे केकरो सोझे मुँहक असीरवाद देने तँ मुँहमे मुंगबा नइ भेटै छै, तइले हनुमानजी जकाँ नइ मुगरदन तँ मुगरियो भाँजहि पड़त...।

दुखमोचन बाबा बजला-

“अपन की मन अछि?”

‘अपन मन’ सुनिते रेहना विस्मित भऽ गेल। विस्मित होइते रेहना बदलए लगल। आब ओ रेहना नहि, जे पहिने छल। आब रेहना अर्द्धनारीश्वर बनए लगली। पुरुषत्वक प्रवेश रेहनाक तन-मनमे हुअ लगल।

रेहना बजली-

“बाबा, जाबे लोक जीबैए ताबैये ने धरम-करम निमाहैए। अखन ते हमहूँ तीनू बच्चाक माए बनि जीविते छी, तँए अपन करतब निमाहबे ने अछि।”

दुखमोचनो बाबाक मनक पट जेना खुजि गेलैन, बजला-

“पाँच कट्ठा रामझिगुनिक खेती अछि, अधा-अधाकेँ पाहि लगा जँ तोड़ब तँ सभ दिन करखन्ने जकाँ निकलत। ओकरा बेच कऽ जेतेसँ परिवार चलत से रखि लेब, बाँकी हमरा दऽ देब।”

दुखमोचन बाबाक बात सुनि रेहना मुस्किया उठली।

**❑ साभार : गपक पियाहुल लोक**

# पहाड़क बेथा

सौनक फुहार पड़िते जहिना नरम-गरमक बीच गप-सप्प शुरू होइत तहिना धाराक संग निकलैत पहाड़ समुद्र दिस बढ़ल तँ कबइ माछ जकाँ समुद्रो सिरा ससैर पहाड़ दिस बढ़ल। जहिना अकासक बून पबिते पानि रंग जकाँ चुहैट धड़ैए तहिना दुनूक बीच भेल। पनचैतीक ओइ पंच जकाँ जे अपन बेथा कहए जाइत आ अनके तेते बेथा रहैत जे अपन तर पड़ि जाइत तहिना समुद्रोकेँ भेल। ओना, अपन-अपन बेथा दुनूकेँ रहै मुदा सिर चढ़ल पहाड़ रहने समुद्र चुपे रहल। मनमे संतोष भेलै जे जिनगीए केहेन छैन तँए बेथे केते हेतैन। कनी पाछुए अपन बेथा राखब। खिलैत कोढ़ी जकाँ, जे फूल बनत आकि फल, बिहुँसैत समुद्र पुछलक-

"भाय, बड़ तबधल देखै छी, पियास लगल अछि की?"

जहिना पियासल बटोहीकेँ कोनो दरबज्जापर पानिक लोटा सोझहा अबिते आत्माक तरास लपैक कऽ पकैड़ लैत तहिना पहाड़ बेथित भऽ बाजल-

"देखू जे सात बितक केहेन अछि जे एक तँ अदहासँ बेसी फटले छै तैपर केहेन ठट्ठा केलक हेन!"

बेथामे नहाएल पहाड़केँ देख समुद्र पुचकारि कऽ पुछलक-

"भैया, अहूँ जँ बेथा-जेबइ तँ हमरा सबहक की गति हेतइ। अहींक आशामे ने हमहूँ जीबै छी?"

रसाएल समुद्रकेँ देख क्षुब्ध होइत पहाड़ बाजल-

"कहू जे एहनो ठट्ठा होइ छै जे टिकमे बान्हि देने अछि, खुनलौं पहाड़ निकलल चुहिया। यएह निसाफ होइ जे मेडिकलक किताब पढ़निहारकेँ जँ कियो कहै जे अहाँकेँ सरदियो छोड़बैक लूरि नै अछि, ई केहेन हएत!"

**❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता**

# उदय-प्रलय

विदेशसँ पी.एच-डी.क डिग्री पाबि धरणीधर गाम पहुँचला। गाममे पएर दइते गामक बात मन पड़ए लगलैन- यएह गाम छी, जैठाम सात पुस्तसँ बास अछि आ आगूओ केतेक दिन धरि बसले रहब। मुदा लगले समाजिक परिवेश सोझामे आबि धमकलैन। धमकलैन ई जे जहिना अपन जन्म ऐ सुखपुरमे भेल तहिना बच्चामे पालन-पोषण सेहो भेल, पछाइत गामेक स्कूलमे शिक्षा पेबा लेल पिताजी नाओं लिखा देलैन। दस बर्ख धरि गामक स्कूलमे पढ़ि पड़ोसी गामक हाइ स्कूलमे नाओं लिखेलौं आ हाइ स्कूल टपला पछाइत दरभंगा कौलेजमे नाओं लिखा एम.ए. पास केलौं। पढ़ैक अपन जिज्ञासा आ परिवारक सहयोग पेब विदेशसँ विशेषज्ञताक डिग्री सेहो उपार्जित केलौं। डॉक्टर वा आन प्रोफेसर जकाँ तँ नहियेँ भेल जे किछु दिन नोकरी केला पछाइत विदेश गेलौं। नोकरी करैसँ पहिने विदेशसँ डिग्री हाँसिल केलौं, आब नोकरी करब।

'आब नोकरी करब' वाणीमे अबैत-अबैत धरणीधरक अपनो जिनगीक बानि उबानिसँ सुबानि हुअ लगलैन। उबानि-सुबानिक बीच बाटपर धरणीधरक मन ठमकए लगलैन। एक दिस पूर्वक सात पुस्तसँ गाममे बासभूमि रहल आ आगूक तँ निश्चित ठेकानो नहियेँ अछि जे केतेक दिन रहत। निश्चित ठेकान ऐ दुआरे नहि जे समाजिक परिवेश

एहेन बनि गेल अछि जे पढ़लो-लिखल आ बिनु पढ़लो-लिखल लोक अपन बाप-दादाक जन्मभूमि छोड़ि-छोड़ि अनतए बसए लगला अछि, तँए गाम उपैट गेल सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। अखनो ओहन गाम अछिए जे अनेको पुस्तसँ बास करैत अनेको परिवारक वंश आबियो रहल अछि आ आगूओ केतेक पुस्त धरि बसबे करत...।

एकाएक धरणीधरक विचारक व्यारमे लपट उठलैन। लपट ई उठलैन जे गाम छोड़ि जे कियो बहराइ छैथ तेकर हजारो कारण अछि, से अखन नहि, अखन एतबे जे जे अपन गामकेँ चीन्हि गामसँ बहराइ छैथ वा बिना चीन्हने गामसँ बहराइ छैथ। जँ गाम चीन्हि बहरेता तँ गामो जरूर चीन्हतैन आ जँ गामकेँ बिनु चीन्हने जे बहराइत हेता, तँ हुनका संग गामे किए चीन्हि-पहचीन्ह रखतैन?

...ऐठाम आबि धरणीधरक वैचारिक व्यारक लपट सेहो लपटए लगलैन। ओना, धरणीधरक सोभावो अन्वेषी बनि गेल छैन। मुदा अन्वेषियोक तँ अपन संसार छै, आगूमे जे संसार ठाढ़ अछि तोहूसँ किछु लइ छैथ आ अपन जे संसार निरमै छैन तोहूसँ उपार्जित करै छैथ...। दुनू संसारक बीचक क्षितिजपर लटकल धरणीधर ने ऊपर चढ़ि रहल छला आ ने निच्चेँ उतरल होइन। एक दिस गाम-समाजक विराट रूप, जे रूप यशोदा मैंयाकेँ कृष्ण अपन बालपनेमे देखौने रहथिन आ दोसर ओ विराट रूप जे महाज्ञानी-महापण्डितक संग दुर्योधनक दरबारमे देखौने छेलैथ, दुनूक बीचक जे हजारो योजनक दूरी अछि तइ दलदलमे धरणीधर फँसि गेला।

ओना, अनजान सुनजान महाकल्याण सेहो होइते अछि मुदा ओ जीवन-मृत्युक बीचक बाट छी किने तँए, थोड़ेक कठिन, थोड़ेक उकड़ू आ थोड़ेक भारीक संग जबदाहो अछिए। गाम दिस उनैट कऽ जखन धरणीधर देखए लगला तँ बुझि पड़लैन जे नवतुरिया छौड़ा सभसँ जँ

किछु बुझए चाहब आ पुछबै तँ ओकरा बकछुहुल लगतै। तेकर कारणो अछि। आजुक जे नवसृजन भऽ रहल अछि ओ ठीक विपरीत दिशामे अछि, जइसँ ओ लगले कहत जे फल्लाँ गुरुआइ करए चाहैए। ओना, एकर दोसरो पक्ष अछि, जँ अहाँ परिवारसँ समाज धरिक बच्चाक बीच बालपन रूपमे रमि किछु पुछबै तँ ओ एहनो बहुत बात सोझामे रखि दइए जेकर नाँगैर पकैड़ अहाँ नेंगरियबैत ओकर मुँह धरिक परिचय पेब सकै छी। ओना, उम्रक कारणे वा उदित ज्ञानक कारणे धरणीधर ने आगू सोझ बाट देख रहल छला आ ने मनविचार पाछू सहैट रहल छेलैन। हराएल-भोथियाएल बाटपर ठाढ़ बटोही जकाँ धरणीधर चारू दिस चकोना भऽ भऽ देखए लगला। मुदा केम्हर मुहेँ बढ़ब से निश्चय कइये ने पाबि रहला अछि। ओना, धरणीधरक मनक बीच स्पष्ट रूपमे विचार जगि चुकल छेलैन जे जहिना कोनो भूमिक लेल मनुखक खगता अछि तहिना मनुखोक लेल भूमिक खगता सेहो अछिए। ओना, खाली मनुखे मात्रकेँ नहि, आनो-आनो जीव-जन्तुक लेल भूमिक खगता अछिए। मुदा ओकरा ने चिन्तन शक्ति छै आ ने सोचन क्रिया...।

इतिहासक विद्यार्थी रहने धरणीधरकेँ एतेक तँ मनमे छैन्हे जे केना-केना राज-पाटक छीना-झपटी दुनियाँमे होइत आबि रहल अछि आ कोन-कोन रूप क देश दुनियाँमे बनल-बसल अछि। मुदा किए अछि आ किए भेल से बुझिये ने पेब रहल छला। खाएर.., अन्वेषी मन धरणीधरक बनियेँ गेल छेलैन तँए देखल संग मन किछु दूर बिनु-देखलोक आगू दिस दौड़िये जाइ छेलैन। मुदा जेतएसँ सुनसान बुझि पड़ैन तेतए-सँ घुमि जाइ छला। आगू दिस जखन नजैर उठैन तँ देख पड़ैन जे दुनियाँक जननिहार विशेषज्ञ रहितो अपन गाम-घरक इतिहास जनिते ने छी। ओना, एहेन दुर्भाग्य मिथिलावासीकेँ शुरूहेसँ रहलैन जे अध्यात्मिक रूपमे मिथिलाक परिचय भेलैन मुदा वैज्ञानिक रूपमे नहि भेलैन अछि जइसँ ज्ञान रहितो सज्ञानसँ दूर छथिए। किएक तँ ज्ञानक पाछू विज्ञान अबैए आ विज्ञानक

पाछू सज्ञान अबैए...। लगले मन पिघैल कऽ मोमबत भऽ गेलैन। मोमबत होइते धरणीधरक मन बिचड़ए लगलैन- अखन तक विद्यार्थीक जिनगी रहल, एक अध्येताक रूपमे गुजैर रहल छी, जँ केतौ प्रोफेसर भेल रहितौं तखन किछु पदक मदो रहैत मुदा से तँ अछि नहि। किए ने अपन गामेक बुढ़-पुरानसँ अपन गामक इतिहासक पता लगाबी। ज्ञाने तँ एहेन गुण छी जे केकरोसँ कियो छिपबैत नहि अछि। ई दीगर भेल जे ज्ञानोमे क्षलज्ञान कहियौ आकि चोरज्ञान आकि बलज्ञान सेहो अछिए जे एक-दोसरकेँ छलितो अछि, चोरोबितो अछि आ छीनतो अछिए। मुदा जैठाम तीनू संगे अछि, तैठाम तँ थोड़ेक भरिगर भइये जाइए। अन्वेशी सोभाव रहने धरणीधरकेँ निर्णय करैमे सिर-संकोच नहि होइन। निर्णय कऽ लेला जे गाममे ने कियो दोस छैथ आ ने दुश्मन, सभ गौंआँ भेला तँए किनको ऐठाम जा कऽ पुछब (बुझब) सँ हिचकब नहि। सभठाम जाएब आ सभसँ गामक पुरान गति-विधिसँ लऽ कऽ आजुक गति-विधि तक जानैक कोशिश करब। जेतेक भेटत तेतेक अपन अनुसंधान भेल जे नहि भेटत ओ ऐगला पीढ़ी-ले रहत।

दोसर दिन धरणीधर गामक जे सभसँ बुढ़ बड़गद बाबा छला तिनका ऐठाम पहुँचला। बड़गद बाबा एक जोड़ बकरी लऽ कऽ चरबैत रहैथ। अपने बड़क गाछक निच्चाँक छाहैरमे बैसल आ बकरी बाधमे चरैत रहैन।

धरणीधर पहुँचते बजला-

“बाबा, अहींसँ किछु बुझैक अछि?”

ओना, पहिने बकरी चरबाह बड़गद बाबाकेँ अनसोंहाँत लगलैन जे हमरा सन बुड़िवानसँ एकटा नवजुगक बुधियार लोक की पुछत..! मुदा अपन उमेरक लेहाज करैत बड़गद बाबा बजला-

“बाउ, बकरी चरवाह सन लोककेँ बुइधिक ओकाइतिये केते रहै छै

जे किछु पुछब, मुदा जएह रहै छै ओइसँ जँ दोसरकेँ उपकार हएत तँ ऐसँ पैघ कीर्तिये की हएत आ दाने की हएत।"

धरणीधर बजला- "बाबा, अहाँ तँ अस्सी बर्खसँ ऊपर चढ़ि गेल छी, तँए अस्सी बर्खक दिन-रातिक घटना तँ गामक देखल-सुनल अछिए।"

बड़गद बाबा बजला-

"बौआ, जेते देखलौं आ जेते गुणलौं ओते जँ मन रखितौं से ओहन चौरगर बुइधिक बखारी थोड़े अछि। मुदा तैयो नइ सोलह अना तँ सोलह पाइयो बरबैर नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।"

धरणीधर-

"आब तँ उमेरक हिसाबसँ ऐसँ भारी, माने बकरी चरवाहिसँ भारी काजो नहियेँ कएल हएत, तखन तँ जीवन-ले किछु करब आवश्यक अछिए।"

धरणीधरक विचारमे जेना बड़गद बाबाकेँ अमृत भेट गेल होनि तहिना मन तिरपित भेलैन। बिहुसैत बजला-

"बौआ, अहाँ नव पीढ़ीक लोक छी, अखन दुनियाँमे पएरे रखलौं अछि, नीक जकाँ भरिसक रोपाएलो हएत कि नहि से तँ हमरा नइ बुझल अछि।"

बड़गद बाबाक विचारमे धरणीधरकेँ की भेटलैन से तँ असल धरणीधरे बुझता, मुदा मुँहक रोहानी कहए लगलैन जे जेना सजमनिक सिर भेट गेल होइन। लंकामे राम-रावणक लड़ाइमे मेघनादक वाणे जखन लक्ष्मण मुरछेला तखन जीबैक लेल मात्र सिर सजमनियेक खगता पड़ल रहैन, जे हनुमान सुमेर पर्वत उठा कऽ आनि पुरौलकैन। पएर रोपैक बात सुनि धरणीधर बजला-

"बाबा, पएर रोपैसँ पहिने जगह-जमीन चाही किने आ तेकरो

पहिने चीन्हब तखन ने ओइपर अजमा कऽ पएर रोपब।"

ओना, धरणीधर जइ रूपे बुझए चाहै छला तइ रूपे तँ बड़गद बाबा नइ बुझा सकै छेलैन, मुदा एते तँ मनुखक सोभावमे रहिते अछि जे दस-पाँच छोड़ि सैंकड़ामे नबे-पनचानबेटा ओहन लोक तँ छथिए जे प्रश्न बुझैथ वा नइ बुझैथ मुदा किछु-ने-किछु जवाब देबे करता, भलेँ ओ प्रश्नक उत्तर होउ वा नइ होउ, प्रश्नसँ मेल खाउ वा नइ खाउ...। मुदा एते तँ धरणीधरक अन्वेशी सोभाव मानियेँ गेल छेलैन जे जँ कोनो विचारक छाहोँ-छूँह देख लेब तँ ओइसँ अनुमान कइये सकै छी जे पहाड़क छाँह छी आकि गाछ-बिरीछक, तँए धरणीधरक मन प्रमुदित भइये गेल छेलैन।

बड़गद बाबा बजला- "बौआ, आइ दस बर्खसँ बकरी चरवाहि करै छी जइसँ दुनू परानीक दुनू साँझक बुतातक जोगार भऽ जाइए। ओना, बेटा-पुतोहु सेहो अछि मुदा ओकरा तँ अपने तेतेक डारि-पात भऽ गेल छै जे दिन-राति हेरान रहैए। बाल-बच्चा अवोध छै, ओ कियाँने गेल जे उपार्जन केकरा कहै छै आ एकर की खगता लोककेँ छै, मुदा हमर तँ धाँगल जिनगी अछि तँए बातकेँ बुझै छी।"

बड़गद बाबाक कर्मठता सुनि धरणीधर बजला- "बाबा, ईहो तँ लोक कहै छै जे 'बड़ रे बालक एक समाना' माने जहिना बच्चा तहिना वृद्ध दुनू एके रंग भेला।"

बड़गद बाबा बजला- "बाउ, एके मुहेँ लोक केकरो गारियो पढ़ैए आ केकरो आसिरवचन सेहो दइए, मुदा दुनू एक थोड़े भेल। बच्चा जिनगी (मनुखक) पूर्व पक्ष भेल, वृद्ध उत्तर पक्ष भेल, तँए दुनूकेँ एक थोड़े मानल जा सकैए।"

धरणीधर बजला- "बाबा, बकरी चरवाहिसँ पहिने की करै छेलिऐ?"

मुस्की दैत बड़गद बाबा बजला- "महराइ गबै छेलौं। भरि-भरि राति अपने ढोलको बजबी आ महराइयसँ लोककेँ जगेबो करिऐ, मुदा गाम दिस जखन नजैर उठा तकै छी तँ अपनासँ पुरान कहाँ केकरो देखै छिऐ। अखन जेतेक लोक गाममे अछि, ओकर जनम हमरा आगूमे भेल छइ।"

धरणीधर बजला- "अपन मन केहेन कहैए?"

बड़गद बाबा- "मन की कहत, जिनगी जीबैमे कहियो अभाव भेल जे मन किछु कहत आकि उपराग देत। उपरागक भागी तँ ओ अछि जे परजीवी अछि, वा जे अनका भरोसे जीबैए।"

बड़गद बाबाक बात सुनि धरणीधरकेँ जेना मन प्रस्फुटित भऽ गेलैन तहिना सोलहन्नी मुस्कान दैत बजला- "वाह!"

'वाह' सुनि बड़गद बाबा फुटि पड़ला-

"गामक माटि-पानिक उदय-प्रलय केना भेल आ केना होइए, गामक उदय-प्रलय केना होइए, मनुखक उदय-प्रलय केना भेल आ केना भऽ रहल अछि। तहिना दुनियोँक उदय-प्रलय केहेन अछि आ केहेन हएत, एते बात बुझैक ने खगता अछि वाउ आ ने बुझिये पएब। तखन तँ..?"

धरणीधरक मन जेना भरि गेल होनि तहिना बजला-

"बाबा, चाह पीबैक बेर भऽ गेल अछि, अखन जाइ छी।"

बड़गद बाबा-

"बाउ, नव पीढ़ीक कर्ता-धर्ता अहीं सभ छी, हमरो सभपर धियान राखब।"

❑ **साभार : गपक पियाहुल लोक**

# कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

| | |
|---|---|
| जिगेसा | विदाइ |
| लेहाज | कर्तव्यपरायन सुगा |
| जानक मोल | निशाँ |
| समर्पण | दान-दैछना |
| स्तब्ध | माइक वचन |
| भोरक झगड़ा | मथाहाथ |
| शालीनता | पाइक मोल |
| पान | गंजन |
| पवनक विवेक | नमहर फेरा |
| हरवाहि | अपन काज |
| समरथाइक भूत | बेटपन |
| समता | उमेद |
| सुखाएल सूरत | एकोटा ने |
| खजाना | कथनी नै करनी |
| मौसी | मुसाइ पण्डित |
| कर्ज : 2 | घरवास |
| टुटल मनक जुटान | भूल |
| ऐँठ साड़ी | बत्तीसोअना |
| अस्तित्वक समाप्ति | पुरनी भौजी |
| जाति नहि पानि | अर्द्धांगिनी |

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेँमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह

गंगा नहेलौं

बकठाँइ

गुलेती दास

खर्च

डॉक्टर हेमन्त

मनुखक मूल्य

तीन जुगिया भाय

आश्रम नहि सोभाव बदली

मायराम

शुभचिन्तक

विधवा बिआह

वैष्णवी भगवती

प्रेमी

शंका

मुइलो बिसेबैन

प्रतिभा

केतौ नै

हमर कोन दोख

असगरे

डीहक बटबारा

मूलधन

छूआ

लफ साग

नहरकन्हा

अपन सन मुँह

पाप आ पुण्य

चोरक चोरबती

मातृभूमि

कटा-कटी

हरदीक हरदा

बेरपर

झगड़ाउ-झोटैला

फॉगु

बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर

पतझाड़

धरम काँट

तिलासंक्रान्तिक लाइ

कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भोँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्रूताक मद

| | |
|---|---|
| क्रान्तियोग | अनेरुआ बेटा |
| पाही पट्टी | कछमछी |
| गोहाइर | समदाही |
| मरियाएल मन | वारंट |
| मदैत नै चाही | एकाग्रचित |
| बोनिहारिन मरनी | गलगर भैंस |
| आशापर पानि पड़ल | प्रवल इच्छा |
| बुढ़िया दादी | अधरवरूआ |
| बाबी | मोहरा |
| बुधनी दादी : 1 | भँसियाएल बाल-बोध |
| क्रियाशील | दूटा पाइ |
| समझौता | अपने केलहा |
| रत्न गमेवाक दुख | समुद्री विद्या |
| भाइक सिनेह | बीरांगना : 1 |
| हारि | अनुशासन |
| जाम | बिहरन |
| विदाइ-दैछना | हारि-जीत : 1 |
| टाइपिस्ट | अपसोच |
| गजपट खेती | अपन पुरखाक डीह |
| सुआद | खलओदार |

| | |
|---|---|
| पढ़ल सुगा बौक | गामक मुँह फेर देखब |
| गेल माघ उनतीस दिन बाँकी | गुड़ा-खुद्दीक रोटी |
| मान | चौकीदारी |
| बालमण्डली | देव उठान |
| नीक बोल | अनदिना |
| | |
| कियो ने | सुमति |
| स्वरोजगार | आशापर पानि फेर गेल |
| झिसीक मजा | चर्मरोग |
| लतियाएल जिनगी | केतौ ने रहलौं |
| सजमनियाँ आम | मुँह-कान |
| | |
| त्रिकालदर्शी | बाबाक बाग-बगिया |
| सड़ल दारीम | पुरस्कार |
| बटखौक | फुसियाह |
| स्मृति शेष | गामक सुरता |
| बिसवास | कचोट |
| | |
| हाथी आ मूस | जेकर चुन तेकर पुन |
| गामक बान्ह | एते दिन अपना-ले आब अनका-ले |
| पनचैती | रमैत जोगी बोहैत पानि |
| भबडाह | पनचैती पनपना गेल |
| दूरी | जेठुआ गरदा |

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। -**गजेन्द्र ठाकुर**

**जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार :** 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।







**पल्लवी प्रकाशन**
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452